NOVEMBER 2019

RAINBOW SATHI
रेनबो साथी

हम क्या चाहते: हमारी नजर में चमकता है क्या और खटकता है क्या

WHAT WE WANT: WHAT WE DETEST AND WHAT BRINGS A SPARKLE IN OUR EYES

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

TEAM Work

Year 3, Issue 14
November 2019

EDITOR IN CHIEF
BHASHA SINGH

ADVISIORY BOARD
T.M. KRISHNA
K. LALITHA,
GEETA RAMASWAMY
K. ANURADHA

EDITORIAL BOARD

CHANDA
(DELHI)

SAHITYA
(HYDERABAD)

SHIVAM
(PATNA)

S KUMAR
(HYDERABAD)

AMBIKA, DEEPTI
BEZWADA WILSON

CHILD JOURNALIST

SUMMI MUNIR, DELHI
DEEPAK AMAN, DELHI
SABITHA, HYDERABAD
A KUMAR, HYDERABAD
NAGA LAXMI, HYDERABAD
BHAVANI, CHENNAI
ARUN KUMAR, PATNA
CHAMPA KUMARI, PATNA
SOMNATH CHAUHAN, PUNE
SAVITRI, BANGALORE
KEERTHANA, BANGALORE
SUBHASHREE, KOLKATA
KABITA, KOLKATA
RIYAZ ANSARI, PATNA
CHANDA KUMARI, PATNA
AMITA KUMARI, PATNA
ASHA KUMARI, PATNA
SHERNISHA, CHENNAI

CITIZEN JOURNALIST

ARTI SINGHASAN, DELHI
DIVYA, HYDERABAD
CHAKRAVARTHY KUNTOLLA, HYDERABAD
PRIYADHARSHINI, CHENNAI
JOYTI KUMARI PATNA
AMRUTA, BANGALORE
KANCHAN PASWAN, KOLKATA

SUPPORT TEAM

PRISCELLA
KOLKATA
SHINY VINCENT
BANGALORE
SRILATHA MORAMPUDI
PUNE
NANKI
DELHI
SHADAN
PATNA
KRANTHI
HYDERABAD
SIVAGAMI NATARAJAN
CHENNAI
BABU S
HYDERABAD
SAKSHI TIWARI
HYDERABAD

Design:
ROHIT KUMAR RAI

Editor's Column

हम बोलें दुनिया सुने...

दोस्तो

हम बच्चे दुनिया को कैसे देखते हैं। हमारा अपना नज़रिया होता है किसी भी घटना- किसी भी स्थिति या रिश्तों को देखने-समझने का। इसकी ठोस वजहें भी होती हैं। हमारे आस-पास का माहौल कैसा है, हम कहां और कैसे बढ़े हो रहे हैं, इनसे तय होती है हमारी पसंद-नापसंद। हमारा बुनियादी स्वभाव भी इससे प्रभावित होता है। यह समझना और दुनिया को इसे समझाना।

इसे ही समझाने की कोशिश हम रेनबो साथी के इस अंक में कर रहे हैं। हम सब जानते हैं कि रेनबो होम्स में रहने वाले बच्चों का अनुभव, बाकी घरों में रहने वाले बच्चों से अधिक होता है। हम जितना अपने शहर-मोहल्ले-गलियों के बारे में जानते हैं, हम जितना भूख और गरीबी के बारे में जानते हैं, हमने अपराध और हिंसा को जितने पास से देखा है, उतना किसी दूसरे बच्चे ने शायद ही देखा हो। बालिग होने, यानी 18 साल होने से पहले ही हमें समाज की अनेक कुरीतियों से टकराना पड़ता है। हमने अपनी छोटी-सी जिंदगी में कई साल असुरक्षा में गुजारे हैं, लिहाजा हमें सुरक्षा और केयर का महत्व पता है। बाल विवाह से जीवन कैसे तबाह होता है, इसे सामने-सामने देखा और महसूस किया है। बाल मजदूरी किस तरह से बचपन को निगलती है- यह हमारे लिए किताबी ज्ञान नहीं है।

इसी तरह से हमें दोस्ती करना पसंद होता है, क्योंकि जीवन में कम दोस्त मिलते हैं। दोस्ती ही बड़े से बड़े संकट से पार लगाने का साहस देती है। हम एक-दूसरे का हाथ थामे तमाम संकटों को भूल जाते हैं। खुली जगह, खेलना-कूदना, पार्क, पेड़-पौधे हमारे दिल के करीब होते हैं। पार्क में जाकर हम फूलों की तरह खिल जाते हैं और झूले पर पेंगे मारते हुए हमारी आंखें सपने देखती रहती हैं। हमारे लिए तीन बार का खाना मिलना एक बहुत बड़ा सुख है। रहने के लिए सुरक्षित और प्यार भरा वातावरण हमें दिलो-जान से प्यारा है- रेनबो होम्स में हमारा मन प्राण बसता है।

ये सारी चीजें आपको हमसे ही सुनने को मिलेंगी, क्योंकि ये ही हमारे जीवन का सार है, हमारे जीवन की पूंजी है। हम चाहते हैं कि जब भी बच्चों और बड़े होते बच्चों के बारे में बात हो तो हमारी पसंद-नापसंद का ध्यान रखा जाए और इसे सम्मान भरी निगाह से देखा जाए। यहां हम ऐलान करते हैं कि बच्चों की दुनिया के बारे में कोई भी अवधारणा-हमारे बिना पूरी नहीं है।

हम लड़ेंगे, हम जीतेंगे !!!

We speak world listens

Friends

How do we as children see this world! We have our own vision to see any incident or situation, or to understand the different phases of any relationship. There are reasons for that. Our likes and dislikes are formed by environment around us, where we live and grow. It also shapes our basic nature.

We are trying to understand this in this issue. Children living at Rainbow Homes have more experience of life than the others. They know more about the surroundings, about hunger & poverty. They have seen crime & violence more closely. They fight many social evils even before becoming an adult. Being through insecurity through whole childhood, we know more about importance of care and safety. We have seen lives destroyed by child-marriages from close quarters. We have learnt about child labour through our own experiences.

We love to make friends, as a good friendship is rare. We actually know, why a friend in need is a friend indeed! We love open spaces, parks and nature, where we bloom like flowers and give our dreams a new height while on swings. Three meals a day is a luxury for us, but what we cherish is our stay at Rainbow Homes, where we get a safe and friendly environment.

That's all, what we are going to hear from our kids in this issue. This is the essence of our lives. We wish that whenever we talk about children and young adults, we respect their likes and dislikes. No perception about children's world is complete without them in the centre!

WE SHALL FIGHT, WE SHALL WIN!!!

THE STORY OF A BUDDING FLOWER

My name is Diya Mondal. I am studying in Class IX. I have two younger sisters. Diyanshi Mondal is 4 years old and youngest sister Priyanshi Mondal is 3 years. My age is 13 years. Till class IV, I was studying in a nearby school. My parents admitted me to a residential school in class V. But then our family suffered some financial problems. Due to that my parents were not able to continue my study there. Therefore, in 2017 I returned to home and got admission in Harinavi Subhasini Balika Sikshalaya.

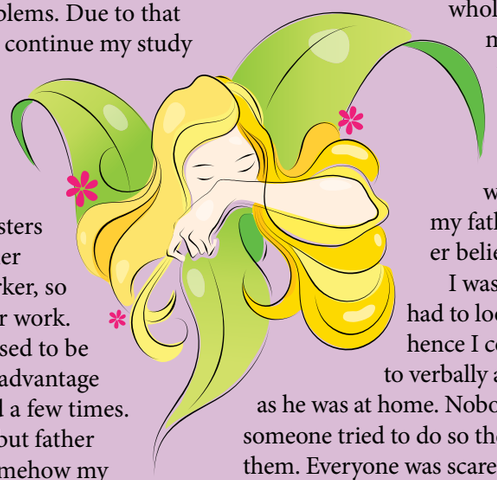

My mother used to go for work every day. We three sisters used to be at home. My father worked as construction worker, so sometimes he will not go for work. On those days, as nobody used to be around, my father took the advantage and abused me. It happened a few times. I wanted to tell my mother but father used to threaten me. But somehow my mother understood that something was wrong. One day my mother came to drop me to the school. On the way she asked me whether everything was fine or not. I was hesitant to tell her the incident. But she insisted and then I told her everything. She assured me that she will do something until I return to home. While I was in school, my mother discussed this matter with all the relatives. They advised her to talk to my father. As soon as I returned to home, I went for my tuition class. During that time my mother confronted my father about that incident. Initially he denied any such thing. But when she pressed him to speak truth, he threatened to kill her. After this incident, he would beat me a lot. My mother didn't want to keep me in at house anymore. We then came to know about Shanti Rani Rainbow Home through a neighbour. My mother took me to the Rainbow Home. After listening the whole story, Sister agreed to give me admission. My mother told me not to be bothered about what has already happened. She said that, after becoming an adult I would be able to prove that my father was a culprit. My mother believed me totally.

I was not happy at my home. I had to look after my younger sisters, hence I couldn't study. My father used to verbally abuse everybody as long as he was at home. Nobody was able to stop him, if someone tried to do so then he will throw things on them. Everyone was scared of him. After I came to Rainbow Home, my mother stopped going for work so that she can take care of my younger sisters.

Now in the vacations, I will not go to my home because counsellor madam has said that it will not be safe for me. I love to stay at Shanti Rani home. I study properly and have many friends. I want to become a doctor or a lawyer when I am adult.

Diya Mondal, 9th Std, Shanti Rani Rainbow Home, Kolkata

खिलते फूल की कहानी

मेरा नाम दिया मंडल है और मैं नौंवी कक्षा में पढ़ रही हूं। मेरी दो छोटी बहने हैं दियांशी मंडल 4 साल की है और सबसे छोटी प्रियांशी मंडल 3 साल की है। मेरी उम्र 13 साल है। चौथी कक्षा तक मैं घर के नजदीक ही एक स्कूल में पढ़ रही थी। मेरे माता-पिता ने पांचवी कक्षा में मुझे एक रेजीडेंशियल स्कूल में भर्ती करा दिया। लेकिन कुछ समय बाद मेरे परिवार को पैसे की दिक्कतों से गुजरना पड़ा। इसलिए मेरी पढ़ाई वहां कराना संभव नहीं रहा। फिर 2017 में मैं घर लौट आई और मेरा दाखिला हरिनावी सुभासिनी बालिका शिक्षालय में हो गया। मेरी मां रोजाना काम पर जाती थी, मैं व मेरी दोनों बहनें घर पर ही रहते थे। मेरे पिता मजदूरी करते थे। जब वह घर पर रहते थे और कोई देखने वाला नहीं होता था तो वह मौके का फायदा उठाकर मेरा शोषण करते थे। मैं अपनी मां को सब बताना चाहती थी लेकिन मरे पिता मुझे डराकर रखते थे। लेकिन किसी तरह मेरी मां को समझ में आ गया कि कुछ गलत हो रहा है। एक दिन मेरी मां मुझे स्कूल छोड़ने गईं। रास्ते में उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं ठीक तो हूं। मैं बताने में हिचक रही थी लेकिन मां के जोर डालने पर मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया। मां ने मुझे भरोसा दिलाया कि मैं घर लौटूंगी तब तक वह कुछ रास्ता निकालेंगी। उन्होंने उस दिन अपने रिश्तेदारों से बात की तो सबने उन्हें मेरे पिता से सीधे बात करने की सलाह दी। मैं स्कूल से घर लौटी और फिर ट्यूशन क्लास चली गई। उस समय मेरी मां ने पिता से इस बारे में पूछा। शुरू में तो उन्होंने इससे साफ मना किया लेकिन जब मां ने सच बोलने के लिए जोर डाला तो पिता ने मां को जान से मारने की धमकी दी। इस घटना के बाद पिता मुझे बहुत मारने लगे। मां को एक पड़ोसी से शांति रानी रेनबो होम के बारे में पता चला। मां मुझे वहां लेकर गईं। सारी बात सुनने के बाद सिस्टर ने मुझे वहां दाखिला दे दिया। मां ने मुझे समझाया कि जो हुआ उसका असर अपने पर आने न दूं और जब मैं बड़ी हो जाऊंगी तो पिता को कसूरवार साबित करूं। मेरी मां मुझपर पूरा भरोसा करती थी।

अब छुट्टियों में मैं घर नहीं जाती क्योंकि काउंसलर मैम का कहना है कि मेरे लिए वह सुरक्षित नहीं। मुझे होम में अच्छा लगता है। पढ़ाई खूब करती हूं और कई दोस्त भी बने हैं। मैं बड़ी होकर डॉक्टर या वकील बनना चाहती हूं।

दिया मंडल, *9 वीं, शांति रानी रेनबो होम, कोलकाता*

अमिता, *6वीं, 12वर्ष, खिलखिलाहट*
अमन रेनबो होम, पटना

समाज की परचम है नारियां ,
पहने संस्कृति की साड़ियां।
समाज की कुरीतियों कों झेलतीं,
सर पर अपने आँचल फेरतीं ।

हम भूल जाते उसकी कद्र,
फिर भी निकलती वो निडर।
नहीं करती मगर कभी जिक्र,
रहती है उनको सबकी फिक्र।

समाज के रीति-रिवाजों को,
बड़े लगन से वह मानती।
राजनीति की भी जिम्मेदारियां,
हौंसले से वे संभालती।

कदमों से जब चौखट लांघती,
समाज के ताने भी सुनती।
लेकिन फिर भी संघर्ष करकर,
एक सम्पूर्ण परिवार बुनती।

Making dreams come true

Kajal,
8th Std. Bangalore

I am living at Rainbow Home for last 3 years. Initially I was not interested to come here. But then staff of Rainbow Home and other children of this home helped me in adjusting myself here. They gave me courage to study as well as to explore hobbies like singing. It was then that I started feeling happy to have come to such a good place. Earlier, I never felt that I had any talent. Only after coming here I realised about that. I and many children like me used to live on streets or railway stations even they all do have dreams of good education and bright future. They just don't know the way to fulfil their dream. Rainbow Homes makes this dream come true for them.

Rainbow Home children give their best for education as well as in other activities. My brother was not interested in studies earlier, but after coming to Rainbow Home he has become good in studies. Few of the children at Rainbow Home have lost their parents. But here everyone makes them feel like a big family. After coming here, Rainbow home is helping me to reach my goal and, not just me but many-many kids like me are inspired to reach their goals here. I like Rainbow Home; I like staff here and my sincere thanks to all of them. But then, I definitely don't like the upma which sometimes we get in food!!

I don't like our social structure

I also don't like social setup because so many unfair things are happening everyday. Women don't get the respect they deserve. They are always exploited, even before their birth and hated thereafter, even in their own families. There won't be any man without woman. I don't like when girls are caged at homes without any education, just killing their dreams. I also don't like kids working or begging on streets. Many selfish adults will force kids to do that. Children are kidnapped, their body parts being sold- I have seen many incidents like that. On the other side, children will leave their parents when they become elder. This is not a good picture of our society.

Renuka Ganesh Kale, Shivaji Nagar Rainbow Home, Pune

सपने सच होना अच्छा लगता है

मैं पिछले तीन सालों से रेनबो हो में हूं। पहले मेरा मन यहां आने का नहीं था। लेकिन फिर रेनबो होम के स्टाफ और साथी बच्चों ने मुझे यहां एडजस्ट होने में मदद दी। उन्होंने मुझे इस बात का हौसला दिया कि मैं पढ़ूं और साथ में गाने जैसे अपने शौक भी पूरे करती रहूं। उसके बाद मैं यह सोचकर काफी खुश हुई कि मैं इतनी अच्छी जगह पर आ गई हूं. पहले मुझे कभी इस बात का अहसास ही नहीं होता था कि मुझमें भी कोई प्रतिभा है, अब यह महसूस होने लगा है। मैं और मेरे जैसे कई बच्चे सड़कों पर या रेलवे स्टेशनों पर जीवन गुजारते रहते हैं, हालांकि उनकी आंखों में भी अच्छी शिक्षा और बेहतर भविष्य के सपने होते हैं। उन्हें बस उन सपनों को पूरा करने का जरिया पता नहीं होता। रेनबो होम्स उन सपनों को पूरा करने का रास्ता दिखाता है।

रेनबो होम्स में बच्चे शिक्षा और बाकी गतिविधियों में अपना बेहतरीन प्रदर्शन करते हैं। मेरा भाई भी पहले पढ़ाई में रुचि नहीं लेता था, लेकिन रेनबो होम में आने के बाद वह पढ़ाई में अच्छा हो गया है। रेनबो होम में कई बच्चों के माता-पिता नहीं हैं लेकिन यहां कोई किसी को भी परिवार की कमी महसूस नहीं होने देता। यहां आने के बाद रेनबो होम मुझे अपने लक्ष्य को हासिल करने में मदद दे रहा है और केवल मुझे नहीं बल्कि मुझसे कई बच्चों को यहां अपने लक्ष्य हासिल करने की प्रेरणा मिलती है। मुझे रेनबो होम पसंद है और यहां का स्टाफ भी; मैं उन सभी को शुक्रिया कहना चाहती हूं लेकिन मुझे यहां का उपमा बिलकुल पसंद नहीं है जो कभी-कभी खाने के लिए मिलता है।

सामाजिक ढांचा अच्छा नहीं लगता

मुझे हमारे समाज का तानाबाना अच्छा नहीं लगता क्योंकि रोजाना कई गलत बातें होती रहती हैं। महिलाओं को सम्मान नहीं मिलता। उनका हमेशा शोषण होता है- जन्म से पहले भी और बाद में अपने ही परिवारों में उन्हें तिरस्कार झेलना पड़ता है। अगर औरत नहीं होती तो पुरुष कहां से होते? मुझे लड़कियों को बंदिश में रखना और पढ़ने-लिखने नहीं देना अच्छा नहीं लगता। मुझे यह भी अच्छा नहीं लगता कि बड़े लोग बच्चों से सड़कों पर भीख मंगवाते हैं। बच्चों को पकड़कर उनके अंग बेच दिए जाते हैं- मैंने कई घटनाएं देखी-सुनी हैं। लेकिन दूसरी तरफ अच्छे घरों में बच्चे बड़े होने के बाद मां-बाप को छोड़ देते हैं। यह हमारे समाज की सुंदर तस्वीर तो नहीं!

CREATING A CHILD FRIENDLY SOCIETY

The concept of Rainbow Home is very unique and special. It has many features that bring the uniqueness to the programme. Homes are very child friendly and non-custodial care providers with rights based approach. The child development process is taken care well in a protective environment with comprehensive care. The concept of Rainbow Homes consists of most importantly human, social and secular values. Establishing Rainbow Homes in partnership with local administration and civil society is an important aspect. At Rainbow Homes, every child is given special care and encouraged as per their best interest in academic, cultural, sports and creative skills based on their level of skill/ talent assessment. Slow learners are motivated to identify their inner potential and build their confidence level to reach their goal. Skill development trainings are given. Soft skills are developed and multiple opportunities are shown with proper guidance to build their professional career under the FUTURE programme concept. The growth areas are also identified in young adults and given trainings to overcome challenges in the process of reaching their goal. In the entire process of grooming children, participation of the child in decision making is given priority. The staff designation terminology itself creates homely and family atmosphere and it does not use any terms like warden, supervisors etc. I believe that this concept will definitely make the children as socially responsible citizens and help us to create peaceful society.

These homes are run as per the JJ act norms. Child safety and protection is very important and Child Protection Committees (CPC) have been set up under Child Protection Policy (CPP) of the Rainbow Homes and is being implemented firmly.

Mainly, monitoring and evaluation tools are very effective and helpful to the partners to improve the quality of the programme. Internal and external financial auditing process by reputed audit companies like Deloitte is an important aspect and it adds the value to the concept.

As many children who were on street and faced hurdles erlier are now living on their own and leading life with dignity, the concept of Rainbow Homes has been recognized as best concept in the country based on the researches and observation studies done by various institutions and individuals. Before I conclude, I take this opportunity to thank Rainbow Foundation India for giving an opportunity to ASRITHA organization as a partner in Balyamitra Network, which is successfully implementing Rainbow homes and Sneh ghars and trying to create a caring and protective child friendly model society.

Nagaraja. S
Project Incharge,
Rainbow home & Sneh ghars, ASRITHA

बनाना बच्चों के लिए अनुकूल समाज

रेनबो होम की अवधारणा बड़ी खास व अनूठी है। यहां की कई सारी बातें हैं जो इसे सबसे अलग करती हैं। होम बच्चों के लिए दोस्ताना हैं और यहां न केवल बंधनों से मुक्त देखरेख है बल्कि यहां की समूची अवधारणा बाल अधिकारों की हिफाजत करने वाली है। सबसे जरूरी बात यह है कि रेनबो होम की अवधारणा में मानवीय, सामाजिक व धर्मनिरपेक्ष पहलुओं का ख्याल रखा जाता है। रेनबो होम की स्थापना में स्थानीय प्रशासन के साथ-साथ सिविल सोसायटी की भी भागीदारी रहती है। यहां हर बच्चे पर खास ध्यान दिया जाता है और उन्हें उनकी रुचियों- पढ़ाई, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियां या रचनात्मक कौशल के आधार पर और उनकी प्रतिभा के मूल्यांकन के आधार पर आगे बढ़ाया जाता है। जो बच्चे सीखने में धीमे होते हैं, उन्हें अपने भीतर की खूबियों को पहचानने के लिए प्रेरित किया जाता है ताकि उन्हें अपने मकसद को हासिल करने के लिए आत्मविश्वास हासिल हो सके। कौशल विकास का प्रशिक्षण भी बच्चों को मिलता है और पूरे दिशानिर्देश के साथ उन्हें तमाम तरह के अवसरों से परिचित कराया जाता है ताकि फ्यूचर्स कार्यक्रम के तहत वे अपना कैरियर विकसित कर सकें। युवाओं में विकास की संभावनाओं की पहचान कर उन्हें उचित प्रशिक्षण दिया जाता है। बच्चों के बढ़े होने की समूची प्रक्रिया में हर चरण पर फैसले लेने में बच्चों की भागीदारी को प्राथमिकता दी जाती है। रेनबो होम में स्टाफ के पदों के नाम भी ऐसे रखे जाते हैं कि उनसे घर का सा माहौल झलकता हो। इसीलिए वार्डन, सुपरवाइजर जैसे पदनाम नहीं रखे जाते। इस तरह के सामाजिक रूप से जिम्मेदार बच्चे विकसित होते हैं जो एक शांतिपूर्ण समाज की रचना में मदद देते हैं। रेनबो होम जेजे नियमों के अनुरूप चलते हैं और वहां बच्चों की हिफाजत को अहमित दी जाती है। रेनबो होम की एक बाल सुरक्षा नीति है जिसे सख्ती से लागू किया जाता है। रेनबो होम के कामकाज की निगरानी व मूल्यांकन की भी पुख्ता व्यवस्था है ताकि सभी पार्टनर इस कार्यक्रम की गुणवत्ता में निरंतर इजाफा कर सके।

जीवन की मुश्किलों का सामना करके जो कई बच्चे पहले सड़कों पर रह रहे थे, वे अब अपने दम पर पूरी गरिमा के साथ जीवन बिता रहे हैं। विभिन्न व्यक्तियों व संस्थानों द्वारा किए गए शोध व अध्ययनों के आधार पर रेनबो होम्स को बच्चों के लिए एक बेहतरीन अवधारणा के तौर पर स्वीकार किया गया है। हम सब मिलकर बच्चों के लिए एक सुरक्षित व अनुकूल समाज की संरचना करने में कामयाब होंगे।

नागराज एस, प्रोजेक्ट इंचार्ज, रेनबो होम व स्नेह घर, आश्रिता

So many good things and handful of challenges

Mohammad Rahim, 10th Std. Ummeed Rainbow Home, Delhi
Seema, 10th Std. Kilkari Rainbow Home, Delhi

Our country is so diverse. Nature has different shades here and as much vivid are the dressing styles, food habits and ways of living. Socially speaking, there are many religions and castes; even there is huge economic disparity. Despite all this, there is also a unity in this diversity, a sense of brotherhood. At times, there might be some religious tensions, but if country is facing any adversity than we all will be one to face it and overcome it.

Rainbow Home is also such a place. Here kids from all religions live together. They eat together and do all activities. Nobody has any ill feeling for other religion. All festivals are celebrated together. Everybody is free to eat, whatever they like- whether vegetarian or non-vegetarian. Nobody is forced to do anything. For me, Rakhi festival brings the most happiness, when brothers and sisters meet. Children from all religions celebrate this festival at home. I stay at Ummeed Home, while my sisters are in Kilkari and Khushi Homes. Though I am a Muslim, but on the day of Raksha Baandhan I will get my sister Rasmuni tie me a Rakhi on my wrist.

But there are still some challenges for our country. Population has been increasing rapidly. More population leads to more poverty. Due to poverty there are more unlettered people and therefore it gives way to corruption. Unlettered people are often exploited, there properties are usurped, their documents are misused, they are coerced into doing wrong things. In our country poverty becomes reason for discrimination. Society gest divided into two as per economic standings. One section has big houses, big cars, their children go to costly private schools; while other section is often deprived of clothes to cover their body and shelter on their heads, their kids often suffer from malnutrition and they travel miles on foot to reach the nearest government school. Those who have everything, even they are indulged in cutthroat competition to move ahead, often ready to trample anyone on their way. Our resources are not used judiciously and therefore we still lag in world on many aspects. But if we get together, than we can overcome all obstacles.

ढेर सारी अच्छाइयां लेकिन थोड़ी-बहुत मुश्किलें भीं

मोहम्मद रहीम, *10वीं, उम्मीद रेनबो होम, दिल्ली*
सीमा, *10वीं, किलकारी रेनबो होम, दिल्ली*

हमारा देश भारत विभिन्नताओं से भरा पड़ा है। यहां प्रकृति के भी अलग-अलग रंग हैं और लोगों का पहनावा, खान-पान, रहन-सहन- सभी कई तरह के हैं। सामाजिक तौर पर देखा जाए तो धर्म व जातियां कई हैं और आर्थिक स्थिति के लिहाज से भी खूब अंतर हैं। लेकिन इतनी विभिन्नताओं के बावजूद लोगों में गजब की एकजुटता है। आपस में भाईचारा है। कभी-कभी धार्मिक तौर पर कोई तनाव हो जाता है लेकिन जब देश पर कोई आपदा या मुसीबत आती है तो सब एक हो जाते हैं और दुश्मन को हराकर ही दम लेते हैं।

रेनबो होम भी एक ऐसी ही जगह है। यहां सभी धर्मों के बच्चे हैं। साथ खाते-पीते हैं, उठते-बैठते हैं और संग-संग रहते हैं। कभी कोई किसी दूसरे धर्म की बुराई नहीं करता। सारे त्योहार भी मिल-जुलकर मनाए जाते हैं। खाने की भी सबको छूट है- यहां शाकाहारी खाना भी बनता है और मांसाहारी भी, जिसे जो पसंद हो खा सकता है। किसी से किसी भी बारे में कोई जोर-जबरदस्ती नहीं होती।

मेरे लिए सबसे खुशी का दिन तो रक्षा बंधन का होता है जब बहन-भाई मिलते हैं और बहनें भाइयों को राखी बांधती हैं। यहां सभी धर्मों के बच्चे यह त्यौहार मनाते हैं। जैसे कि मैं तो उम्मीद होम में रहता हूं लेकिन मेरी बहनें किलकरी और खुशी होम में रहती हैं। रक्षा बंधन के दिन मैं अपनी बहन रासमुनी से राखी बंधवाता हूं, मुसलमान होने पर भी।

हां, कुछ मुश्किलें भी हैं हमारे देश के लिए जिनमें जनसंख्या सबसे बड़ी है। आबादी ज्यादा है और गरीबी भी। साक्षरता कम है जिसके कारण भ्रष्टाचार भी है। अक्सर निरक्षर लोगों का गलत फायदा उठा लिया जाता है- उनकी संपत्ति हड़प ली जाती है, कागजात से हेराफेरी हो जाती है, उन्हें बहला-फुसला लिया जाता है। हमारे यहां गरीबी भी भेदभाव का बड़ा जरिया बन जाती है। अलग-अलग हैसियत वाले समाज के दो हिस्से हो जाते हैं। एक हिस्सा बड़े-बड़े बंगलों में रहता है, गाड़ियों में घूमता है, उनके बच्चे महंगे निजी स्कूलों में पढ़ते हैं। वहीं दूसरे हिस्से के पास सिर पर छत और तन ढकने को कपड़े नहीं होते, उनके बच्चे अक्सर कुपोषण का शिकार होते हैं और सरकारी स्कूलों में पढ़ने के लिए भी मीलों दूर पैदल जाते हैं। जिनके पास सबकुछ है वे भी आगे बढ़ने की होड़ में लगे रहते हैं। खुद को आगे धकेलने के लिए वे दूसरों को कुचलने के लिए भी तैयार रहते हैं। हर तरफ एक प्रतिस्पर्धा है। संसाधनों का सही इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है। यही वजह है कि कई मामलों में हम दुनिया में बहुत पीछे हैं। लेकिन हम चाहें तो मिलकर सारी दिक्कतों से पार पा सकते हैं।

आसमां हो तुम
ज़मीं से न मिले तेरा पता
ख्वाबों से क्यों पूछते हैं बस तेरा पता
मंजिलें मिली तो हुआ खुद से लापता
दिलों में सिमटी हुई तेरी दास्तां
आसमां हो तुम
ज़मीं से न मिले तेरा पता
आंखों में छूपा जो आंसू पलकों से आ गिरा
ज़मीं पे आके वो भी हो गया है लापता
आसमां हो तुम
ज़मीं से न मिले तेरा पता...

Amina,
Kilkari Rainbow home, Delhi

S. Manikandan,
7th Std, ASP Home, Chennai

बुरी नजर वाले पसंद नहीं

■ लड़कियां बाहर निकलती हैं तो लोग बहुत बुरी नजर से देखते हैं, हमें यह पसंद नहीं।
■ हमारे समाज में शराब बेची जाती है जो हमें पसंद नहीं है क्योंकि शराब पीने से खुद का भी जीवन बर्बाद होता है और साथ में बच्चों का भी।
■ लड़कियां कम उम्र में ब्याह दी जाती है जिसके कारण लड़कियों की जिन्दगी बर्बाद हो जाती है और वे पढ़ नही पाती। नापसंद यह भी है कि बड़ी-बड़ी बिल्डिंग, फैक्टरी, पुल तो सब बन रहे हैं लेकिन गरीबों के लिए घर नहीं।
■ लोग बीड़ी-सिगरेट पीकर टुकड़े सड़क पर फेंक देतें हैं। अक्सर जब नगर निगम वाले सुबह साफ-सफाई करने आते है तो लोग जान बुझ कर गंदा फैला देते हैं।
■ सवेरे स्कूल जाते हुए हमें कई गरीब लोग सड़क पर सोते दिखते हैं और यह हमें पसंद नहीं।

आ रहा है समाज में धीरे-धीरे बदलाव

■ हमें दोस्ती करनी अच्छी लगती है क्योंकि अच्छे दोस्त हर मुसीबत में हमारी मदद करते हैं।
■ हमारे समाज में भेद-भाव थोड़ा कम हो गया है। पहले यह काफी ज्यादा था।
■ लड़कियां हिम्मत करके बाहर निकल रही हैं और वे अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रही हैं।
■ हमें यह पसंद है कि हमारा शहर एक स्मार्ट सिटी बन रहा है, बड़े -बड़े मॉल बन रहे है और शहर को साफ रखने के लिए इंतजाम हो रहे हैं।
■ वातावरण को हरा-भरा रखने के लिए लोग अधिक पेड़-पोधे लगा रहे हैं।

गुड़िया, ज्ञान विज्ञान रेनबो होम, पटना; *चंदा व आशा, घरौंदा अमन रेनबो होम, पटना;* *तनु, खिलखिलाहट रेनबो होम, पटना और* *बजरंगी, उमंग अमन स्नेह घर, पटना*

DISLIKE PEOPLE WITH BAD INTENTIONS

■ When girls move out, they are not looked upon nicely and we hate that.
■ We don't like alcoholic drinks being sold in our society as alcohol spoils lives.
■ Girls are married at young age, they can't study and their lives are rendered useless.
■ We also don't like building big factories, bridges, everything but no houses for poor people. People smoke carelessly and throw butts here and there. We don't like mindless spilling of garbage everywhere.
■ While going to school in the morning we find many poor people sleeping on roads and we don't like that.

Society is changing for sure

■ We like to make new friends as friends always help you in tough times.
■ Our society is changing and gradually the discrimination is decreasing.
■ Girls are showing courage to move out of home, and they are fulfilling their responsibilities.
■ We like that our city is becoming smart. Big malls are coming up and city is kept clean.
■ People are planting more and more trees to keep the environment green.

Gudiya, Gyan Vigyan Rainbow Home, Patna; Chanda & Asha, Ghraunda Aman Rainbow Home, Patna; Tannu, Khilkhilahat Aman Rainbow Home, Patna & Bajrangi, Umang Aman Sneh Ghar, Patna

LIKED JOINING THE AMAN VEDIKA

● Joining the Aman Vedika Rainbow Homes was the major turning point of our lives. We never thought that colours of our life would become brighter; we never thought that we would enjoy every day of our life. We had opportunities of learning new things. Fortunately, we got a platform to express our views. We are surrounded with people who are always there for us to encourage, to mentor our talents, to manage our emotions to help us for building the strong pillars of our life. We feel very happy for good education and getting so many opportunities. We participate in many social activities and became aware of society. We are provided with good playgrounds. We are very happy to be groomed as secular citizens.

अमन वेदिका में आना रहा अच्छा

● अमन वेदिका रेनबो होम में आना हमारे जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण पल रहा। वरना हमने कभी कल्पना नहीं की थी कि हमारी जिंदगी के रंग भी इतने चमकदार बनेंगे, हमने यह उम्मीद भी नहीं की थी कि हमारी जिंदगी के सारे दिन यूं अच्छे बन जाएंगे। हमारे पास नई चीजें सीखने का मौका बन गया। हमें अपने विचार जाहिर करने के लिए भी एक नया मंच मिल गया। अब हमारे चारों तरफ ऐसे लोग हैं जो हमें प्रोत्साहित करते रहते हैं, हमारी प्रतिभा को विकसित करते हैं और हमारी भावनाओं को काबू में रखते हैं ताकि हम अपने जीवन की मजबूत बुनियाद खड़ी कर सकें। हमें इस बात की खुशी है कि हमें अच्छी शिक्षा मिल रही है और कई मौके भी। हम कई सारी सामाजिक गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं और समाज से वाकिफ होते हैं। हमें खेलने के लिए अच्छे मौके मिलते हैं। हमें इस बात की खुशी है कि हम धर्मनिरपेक्ष नागरिकों के तौर पर पल बढ़ रहे हैं।

DISLIKE CASTE DISCRIMINATION THE MOST

● We have a strong dislike for the caste system in our society which makes reservations a must. This has caused a lot of discontent. Due to the caste system upper caste people don't allow the lower caste people inside their houses. Discrimination is prevalent and some people are still practising untouchability.

Abhinav, 11 yrs. Amanvedika Snehghar Biblehouse, Hyderabad
Prashanth, 10 yrs. Amanvedika Snehghar Biblehouse, Hyderabad
Sandeep, 15 yrs. Amanvedika Snehghar Vijaynagar Colony, Hyderabad
Dhatrika, 17 yrs. Amanvedika Rainbow Home, Musheerabad
Keerthi, 18 yrs. Amanvedika Rainbow Home, Musheerabad

जातिगत भेदभाव है सबसे नापसंद

● हम हमारे समाज में जाति व्यवस्था को सख्त नापसंद करते हैं जिसके कारण आरक्षण जरूरी हो जाता है। इसकी वजह से लोगों में असंतोष फैलता है। जाति व्यवस्था के कारण ही ऊंची जातियों के लोग निचली जातियों के लोगों को अपने घरों के भीतर नहीं आने देते। भेदभाव अब भी काफी है और कुछ लोग तो अब तक छुआछूत को मानते हैं।

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • ರೆಯಿನ್‌ಬೊ ಸಾಥಿ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

बेहतरी की योजनाएं हैं अच्छी...

हमारे बिहार में सरकार द्वारा पटना को स्मार्ट सिटी बनाने की योजना बनाई गई है और उस पर काम भी जारी है। समाज की परेशानियों को देखते हुए जगह-जगह पर पुल बनाए गए हैं और मेट्रो ट्रेन की योजना पर भी काम चल रहा है। सरकार ने खाली जगहों पर पार्क भी बनवाये हैं। हम अपने राज्य के लिए सक्षम नेताओं को चुनते है जो हमारे गांव व शहरों को चला सकें और समाज के प्रति जागरूक रहें। बच्चों की शिक्षा के लिए भी बहुत सारी योजनाएं बनी हुई हैं ताकि गरीब परिवारों के बच्चे भी आगे बढ़ सके।

...लेकिन भ्रष्टाचार करता है सबको खराब

हमारे यहां गरीबों के लिए जो भी योजनाएं बनती हैं, वो उन तक न पहुंचकर सीधे अमीरों के पास जाती है! गरीब सड़कों पर ही पड़े रहते हैं और उनकी जगह बीपीएल कार्ड अमीरों के बन जाते हैं। हम जब अपने हक की मांग करते हैं तो हमसे घूस मांगी जाती है और नहीं देने के कारण हम इन योजनाओं से वंचित रह जाते हैं। जो काम सरकार के तरफ से मुफ्त में होने होते हैं उनके लिए भी हमें पैसे देने पड़ते है।

चम्पा कुमारी, रियाज़, चंदा व रचना, *कक्षा 9, घरौंदा अमन रेनबो होम, पटना*

Welfare schemes are good

In our state, Bihar, the government has drafted and started implementing the idea of smart city. Keeping in mind the problems of people, efforts are done to make bridges, fly overs and even metro trains network. Therefore, during elections, we choose the best candidate who could perform duties well and stay alert towards the need of the society. There are many schemes for child education as well so that students from financially weak families can also study well.

...But corruption rots it all

Whatever schemes are made for the poor, they don't reach out to them properly. Instead, they get stuck in the midway. Poor keep living on roads while the rich ones enjoy the benefits of ration. The poor remain excluded from them because they are unable to pay extra money for this. Thus, the work which should be done for free are also ensured only when poor people pay bribe of them.

Champa Kumari, Riyaz, Chanda and Rachna, 9th Std. Gharaunda Aman Rainbow Home, Patna

sanjana pawar,
shivaji nagar
Rainbow Home,
Pune

LIBRARY DAY

Reading is best practise to learn and grow. In Rainbow Homes we have library and with Rainbow Sathi we have Library Day where we enjoy reading write-ups from different parts of country, written in different languages.

Kilkari home Delhi: we sit together, learn together.

RH-Loreto bowbazar Kolkata: Group reading is a great experience. We learn and disscuss different aspects of story

Hyderabad: so much creativity in togetherness

Umeed Sneh Ghar Home, Delhi: We love to draw, read and write

RH-shanti Rani Kolkata: It's reading time

RH-Loreto sealdah, Kolkata: Reading intresting articles from different part of country is a real thrill

Hyderabad: We all are reading Rainbow Sathi but exploring our own creative world

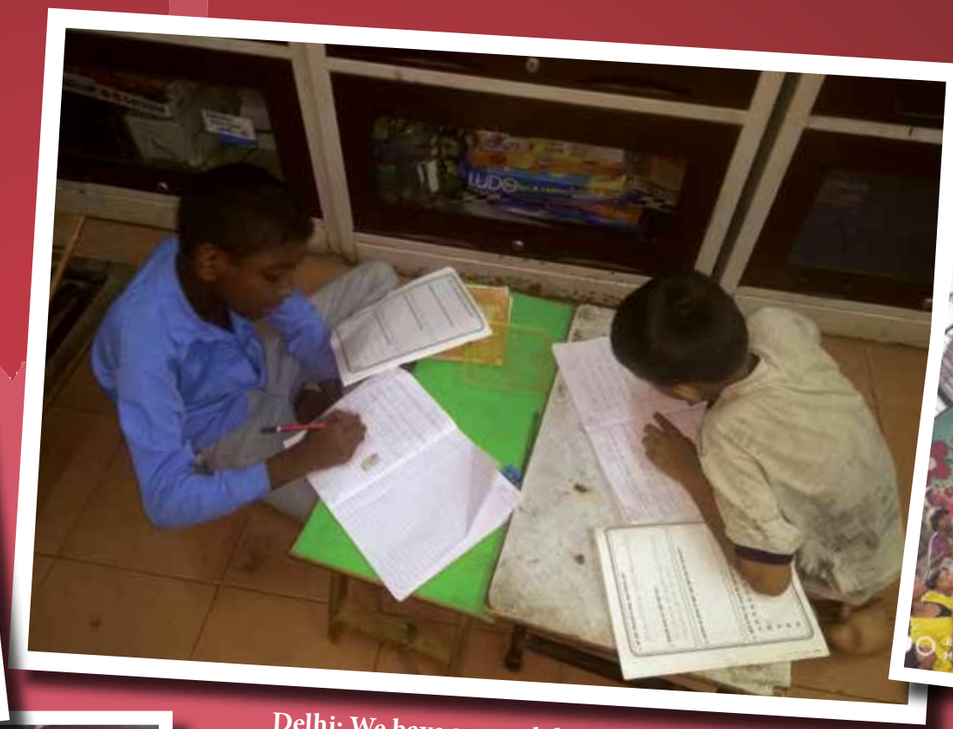

Delhi: We have so much home work to finish and so much to learn

Kilkari Home, Delhi: Reading for others, we fly in multiple colours

Delhi: Action is the punch word to deal in this world

Like the attachment to our parents

• Our parents are the ones who give us most courage. Mother gives birth, father teaches to walk and together they put us on the right path. We must respect and love our parents. We must care for them and look after them well especially during their old age.

Dislike abuse of the girls and children

• What we dislike is sexual abuse (of girls as well as children), teasing us and torturing us when we walk on the streets. Powerful people will be raging the weak and small children. But these problems are mostly in our country only. We should be ashamed of such incidents and the problem is that, the government is not talking any strong actions on these incidents. We want that everyone should get together to stop these atrocities. But this is not happening as there no equality.

Gouthami, 18 yrs. Degree 1st year, SRD Rainbow Home, Hyderabad

Priyanka, 15 yrs. Intermediate 1st year, Bala Tejassu Rainbow Home, Hyderabad

Ram Mohan, 15 yrs. 10th Std, Aman Veidka Vijaynagar Colony Snehghar, Hyderabad

Shivaji, 17 yrs. 10th Std, Bala Tejassu Rainbow Home, Hyderabad

अच्छा लगता है माता-पिता से जुड़ाव

हमारे माता-पिता ही हमें सबसे ज्यादा साहस देते हैं। मां हमें जन्म देती है, पिता चलना सिखलाते हैं और ये दोनों मिलकर हमें सही रास्ते पर आगे ले जाते हैं। हमें अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए और उन्हें प्यार करना चाहिए। खास तौर पर जब वे ज्यादा उम्र के हो जाते हैं तो हमें उनकी देखभाल करनी चाहिए और उनका ख्याल रखना चाहिए।

लड़कियों व बच्चों का शोषण है नापसंद

हमें यौन उत्पीड़न सबसे ज्यादा नापसंद है, लड़कियों का और बच्चों का। जब हम सड़कों पर चलते हैं तो लोग हमें छेड़ते हैं और खराब बर्ताव करते हैं। ताकतवर लोग कमजोर लोगों व छोटे बच्चों का शोषण करते हैं। लेकिन ये सारी दिक्कतें हमारे देश में ही ज्यादा हैं। हमें इन सारी घटनाओं पर शर्म आनी चाहिए और दिक्कत की बात यह है कि सरकार ऐसी घटनाओं पर कड़ी कार्रवाई नहीं करती है। हम चाहते हैं कि सब लोगों को मिलकर ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए आगे आना चाहिए। लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा है क्योंकि हमारे देश में समानता भी नहीं है।

Mangal Ganesh Kale,
10th Std. New Vision Rainbow Home, Pune

power of writing

We had a wonderful meeting on Rainbow Sathi and on writing skills. The meeting started by Srilatha Didi & Anuradha Didi giving beautiful introduction of the meeting. Bhasha Didi had come from Delhi to orient us on Rainbow Sathi. There were 40 participants in the workshop. Each participant introduced themselves. Bhasha Didi explained about the importance of writing & expression and power of giving message through writings. It was exciting to know that our voices are heard by many people through Rainbow Sathi. After knowing this, I felt like writing more and more. After the orientation, we all now knew about out little but powerful magazine. We all felt proud as this magazine is going to every Home in every state. Thus, people are coming to know about us in faraway places. During the workshop, we discussed on writing skills. We also learnt about various types of writings, such as letter writing, report writing, autobiography writing, etc. To sharpen our skills, we were divided into five groups & topics were assigned for writing to each of the group. Every group came forward & presented topic very well.

लेखनी की ताकत

पुणे में रेनबो साथी और लिखने की कला के बारे में एक अच्छी कार्यशाला हुई। इसकी शुरुआत श्रीलता दीदी और अनुराधा दीदी द्वारा इसका परिचय देने के साथ हुई। हमें रेनबो साथी के बारे में ज्यादा बताने के लिए दिल्ली से भाषा दीदी भी आई थीं। वर्कशॉप में कुल 40 बच्चों ने हिस्सा लिया। शुरुआत में हर प्रतिभागी ने अपना-अपना परिचय दिया। भाषा दीदी ने में हमें लिखने व भिव्यक्ति के महत्व के बारे में समझाया और बताया कि लेखनी से हम कितने ताकतवर संदेश दे सकते हैं। हमें यह जानकर बड़ा रोमांच हुआ कि रेनबो साथी के जरिये हमारी आवाज को इतने लोगों द्वारा सुना जा रहा है। यह जानने के बाद तो मेरा और भी लिखने का मन होने लगा। इस वर्कशॉप के बाद अब हमें अपनी छोटी सी लेकिन ताकतवर मैगजीन के बारे में पता चल चुका था। हमें यह जानकर भी गर्व हुआ कि यह मैगजीन अलग-अलग राज्यों में हमारे सभी रेनबो होम में पहुंच रही है। यानी दूर-दूर तक के लोगों को हमारे बारे में पता चल रहा है। वर्कशॉप में हमने लिखने की कला के बारे में चर्चा की। हमने अलग-अलग तरह की लिखने की शैलियों के बारे में भी जाना- जैसे कि पत्र लिखना, रिपोर्ट लिखना, आत्मकथा लिखना, वगैरह। अपने कौशल को माझने के लिए हमें पांच समूहों में बांट दिया गया और हर समूह को विषय बांट दिए गए। हर समूह ने अपने विषय को बड़ी अच्छी तरह से प्रस्तुत किया।

मंगल गणेश काले
10वीं, न्यू विजन रेनबो होम, पुणे

D. Irudhaiyamary,
8th Std. AMJ-Home, Chennai

I like joint families

I like joint family so much. I feel very happy when my mother, sister, brother, grandmother and uncle are staying together. My sister is taking care of me very well. My mother corrects me, when I do mistakes. My grandmother shows love and care towards me. I want everybody to be in joint family.

I dislike lies

I don't like lies. I find it difficult to trust others. Everybody perhaps believes in lies only. Because of this my childhood was affected a lot. Therefore, I don't like people who tell lies.

मुझे संयुक्त परिवार पसंद हैं

मुझे संयुक्त परिवार पसंद हैं। मुझे उस समय खुशी होती है जब मेरी मां, बहन, भाई, दादी, चाचा सब साथ मिलकर रहते हैं। मेरी बहन मेरा खूब ख्याल रखती है। मेरी मां मेरी सारी गलतियों को सुधारती रहती हैं, मेरी दादी मुझे खूब लाड़-दुलार करती है। मैं चाहती हूं कि हरेक बच्चा संयुक्त परिवार में पले-बढ़े।

झूठ है नापंसद

मुझे झूठ और झूठ बोलने वाले पसंद नहीं। मुझे दूसरों पर भरोसा करने में बड़ी मुश्किल होती है। हर कोई सिर्फ झूठ में ही यकीन करता है। मेरे बचपन पर इसका बहुत असर पड़ा। इसलिए मुझे वे लोग पसंद नहीं जो झूठ बोलते हैं।

डी. इरुदइयामैरी, *8वीं, एएमजे होम, चेन्नई*

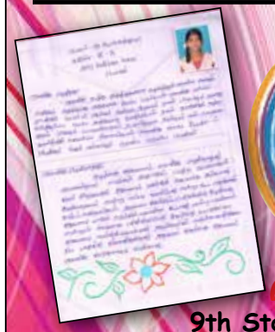

A.Subhaakshaya,
9th Std. AMJ-Home, Chennai

I like reading books

I like to know about historical events. I like reading more and more history books from my school library. I consider that as my valuable time and I want to increase my knowledge.

I dislike most...

I don't like child marriage. I have seen around some children being married and now they are suffering in their lives. Child marriage affects their future.

मुझे किताब पढ़ना पसंद है

मुझे इतिहास की घटनाओं के बारे में जानना पसंद है। इसलिए मैं अपने स्कूल की लायब्रेरी से इतिहास की ज्यादा से ज्यादा किताब लाकर पढ़ती हूं। मुझे लगता है कि पढ़ने का यह समय मेरे लिए बहुत मूल्यवान है और मेरे मन में अपना ज्ञान बढ़ाने की इच्छा हमेशा मजबूत रहती है।

मुझे नापसंद है...

मुझे बाल विवाह सख्त नापंसद है। मैंने अपने आसपास कई बच्चों का ब्याह होते देखा है और देखा है कि उनके लिए जीवन कितना मुश्किल हो गया है। बाल विवाह बच्चों के भविष्य को चौपट कर देता है।

ए. शुभाकाक्षया, *9वीं, एएमजे होम, चेन्नई*

Like peace of mind and body

• Everywhere we need to maintain peace. When we maintain peace, automatically our surroundings will be more peaceful. Peace is a body of meditation. Mentally as well as physically peace relaxes us and increases our power of thinking. We have to be away from things creating sound pollution. There can be may ways to create peace, even planting a tree on your birthday. Peace of mind helps us in mingling with other people and spread happiness. People will start liking you for this.

मन व शरीर की शांति जरूरी

• हमें हर जगह शांति की तलाश रहती है। अगर हम खुद शांत रहेंगे तो अपने आप हमारे चारों तरफ का माहौल शांतिपूर्ण रहेगा। शांति ध्यान लगाने से मिलती है। मानसिक व शारीरिक शांति हमें सुकून देती है और हमारी सोचने की शक्ति को बढ़ाती है। शांति के लिए हमें उन चीजों से भी बचना चाहिए तो शोर करने वाली होती हैं। शांति कायम करने के कई तरीके हो सकते हैं, यहां तक कि अपने जन्मदिन पर एक पेड़ लगाने से भी शांति मिल सकती है। मन शांत होगा तो हम लोगों से घुलमिल सकेंगे और खुशियां फैला सकेंगे और लोग हमें इसके लिए पसंद करने लगेंगे।

Dislike the use of plastic

• We should not unnecessarily use more plastic. People are rampantly using plastic and throwing them everywhere. It is harmful as animals start eating plastics. Mainly, the cows are eating more plastic and they get ingested in their stomach and even cause their death. Our earth can't decompose plastic. Therefore, people start burning them, which is again more harmful for the air. Plastic chokes the water bodies and is harmful for our crops.

Srilatha, 14 yrs, 9th Std. Arun Rainbow Home, Hyderabad
Lavanya, 14 yrs, 8th Std. Arun Rainbow Home, Hyderabad
Paravathi, 18 yrs, TTC 1st Year, Amanvedika Medibavi, Hyderabad
Fathima Azmeri, 18 yrs, MPHW 2nd Year, Amanvedika Medibavi, Hyderabad

प्लास्टिक का इस्तेमाल है नापसंद

• हमें बिना जरूरत इतना ज्यादा प्लास्टिक इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। लोग अंधाधुंध प्लास्टिक का इस्तेमाल कर रहे हैं और फिर उन्हें इधर-उधर फेंक देते हैं। यह बहुत नुकसान करता है क्योंकि जानवर प्लास्टिक खाने लगते हैं। खास तौर पर गायें खूब प्लास्टिक खा जाती हैं जो उनके पेट में जमा हो जाता है और उनके लिए प्राणघातक हो जाता है। प्लास्टिक गलता नहीं है इसलिए उसके कूड़े को लोग जलाने लगते हैं जिससे हवा जहरीली हो जाती है। प्लास्टिक हमारे जल के स्रोतों को भी बाधा पहुंचाता है और फसलों को नुकसान पहुंचाता है।

Life has become beautiful and meaningful now

Amita Kumari from Khilkhilahat Aman Rainbow Home, Patna spoke to her friends from other Rainbow Homes of Patna and wrote about them.

Amita, Class- VI, Khilkhilahat Aman Rainbow Home, Patna

Savitri, Class-VIII, Gyan Vigyan Rainbow Home, Patna

Madhu, Class-VIII, Gharaunda Aman Rainbow Home, Patna

Amita- ***Where did you lived before coming to Rainbow Home and in which conditions did you live there? What you used to do?***

Savitri- Before coming to Rainbow Home, I used to live in Masaurhi. We did not have a home to live and the environment was also very bad. I used to do house work there.

Madhu- I used to live in Badhol village of Darbhanga district before coming to Rainbow Home. I was not in a good state there. I used to help my mother in household work.

Amita- ***Who all are there in your house?***

Savitri- In my house there is my mother, father, three sisters and two brothers.

Madhu- In my house there is my mother, father, three sisters and two brothers.

Amita- ***How did you come to Rainbow Home?***

Savitri- Social mobilizer of Rainbow Home met and spoke to my mother and with her I came to Rainbow Home.

Madhu- Social mobilizers of Rainbow Home spoke to my parents and with them I came to Rainbow Home.

Amita- ***What changes happened to you after coming to Rainbow Home? And how did you start living your life?***

Savitri- After coming to Rainbow Home my life changed completely. Apart from education, I become more aware after coming here. Here I was provided with all the resources and now I participate in every activity like dance, music and games.

Madhu- After coming to Rainbow Home, we were introduced to many important issues which are very essential for our living. And here I started living my life really well.

Amita- ***What is your dream and what do you want to become in life?***

Savitri- I am studying in 8th class and I want to become an Army Officer.

Madhu- I am studying in class 8th and I want to become a good doctor.

जिंदगी अब खूबसूरत और मानीखेज़ हो गई

अमिता कुमारी, खिलखिलाहट अमन रेनबो होम, पटना ने पटना स्थित दूसरे रेनबो होम में रहने वाली दोस्तों से बातचीत की और उनके बारे में लिखा

अमिता- *रेनबो होम में आने से पहले आप कहां और कैसे रहते थे? आप क्या करते थे?*

सावित्री- होम आने से पहले, मैं मसौढ़ी में रहती थी। हमारे पास रहने के लिए घर नहीं था और वहां आस पास का वातावरण भी अच्छा नहीं था। मैं वहां घर का काम करती थी।

मधु- मैं दरभंगा जिला के बधोल गाँव में रहती थी। मैं वहां अपनी मां को घर के कामों में मदद करती थी। मैं वहां खुश नहीं थी।

अमिता- *आपके घर में कौन कौन हैं?*

सावित्री- मेरे घर में माता पिता के अलावा तीन बहनें और दो भाई हैं

मधु- मेरे घर में माता पिता के अलावा तीन बहनें और दो भाई हैं

अमिता- *आप रेनबो होम में कैसे आए?*

सावित्री- रेनबो होम की सोशल मोबिलिजेर मेरी मां से मिली और मैं उनके साथ रेनबो होम आई

मधु- रेनबो होम की सोशल मोबिलिजेर ने मेरे माता पिता से बात चीत की और में रेनबो होम में आ गई

अमिता- *रेनबो होम में आने के बाद आप में क्या बदलाव आया? आपने यहाँ अपनी जिन्दगी कैसे जिनी शुरू की?*

सावित्री- रेनबो होम में आने के बाद मेरी जिन्दगी पूरी तरह बदल गई ड्ढ पढाई लिखाई के साथ मुझ में हर विषय पर जागरूकता भी आई, मुझे सभी आवश्यक संसाधन दिए गए और अब में नृत्य, म्यूजिक, खेल कूद सभी में भाग लेती हूं।

मधु- रेनबो होम में आने के बाद हमे बहुत जानकारी हुई और में अपनी जिन्दगी बेहतर तरीके से जी रही हूं।

अमिता- *आपका सपना क्या है और आप क्या बनना चाहते हैं?*

सावित्री- मैं अभी कक्षा VIII में हूं और सेना में अफसर बनना चाहती हूं।

मधु- मैं अभी कक्षा VIII में हूं और एक अच्छी डॉक्टर बनना चाहती हूं।

अमिता, *कक्षा* - VI, *खिलखिलाहट अमन रेनबो होम, पटना*

मधु, *कक्षा* - VIII, *घरौंदा अमन रेनबो होम, पटना*

सावित्री, *कक्षा* - VIII, *ज्ञान विज्ञान रेनबो होम, पटना*

Newsletter of Rainbow Homes (for private circulation only)

Open Hearts, Open Gates...

Rainbow Homes Program - ARUN works with Rainbow Homes (for girls) and Sneh Ghar (for boys) to empower children formerly on the streets to reclaim their childhood by providing Comprehensive Care, Food, Shelter, Health and Education.

Anna Dhara Campaign

The Anna Dhara campaign is an attempt to reach out to supporters like you from the civil society to make a difference in the lives of children living in Rainbow Homes and Sneh Ghars located in 45 Govt & Private Schools in 8 states.

- providing minimum of a day's meal for 100 children
- share life nourishing values with children

Bank Details:
Bank A/C Name: ASSOCIATION FOR RURAL AND URBAN NEEDY (ARUN)
BANK : Yes Bank Ltd
A/C No: 042494 600000102
Branch : ABIDS, Hyderabad
IFSC : YESB0000424

Rainbow Homes EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Anuradha Konkepudi, Executive Director Email: reach@rainbowhome.in
Rainbow Homes Programe ARUN, 1-1-711/c/1, 1st floor,
Opp. vishnu Residency, Gandhinagar, Hyderabad - 80 Office No: 040-65144656

आईटीआई जाकर खुले भविष्य के रास्ते

रहीम, 16 वर्ष,10वीं, उम्मीद अमन घर, दिल्ली
अमीना,18 वर्ष, 10वीं, किलकारी, दिल्ली
सीमा, 17 वर्ष, 10वीं, किलकारी, दिल्ली

आईटीआई, (ITI) एक सरकारी संस्थान जो हमें तरह-तरह कोर्स प्रदान करता है। जब हम दिल्ली आईटीआई गए तब हमने वहां तरह-तरह के कोर्स देखे। जैसे ग्राफिक डिजाईनिंग, वेल्डिंग, पेंटिंग, आर्कीटेक्चर, एसी रिपेरिंग, मोटर मैकेनिक आदि। ये हमारे फ्यूचर ऑपशंस थे जो हमारे फ्यूचर में कुछ मदद कर सकते हैं। हमें नहीं पता था। जैसे कि वहां लड़कियां भी सारे काम कर रहीं थीं जो कि ज्यादातर लड़के करते हैं। जैसे मोटर मैकेनिक, वेल्डिंग एवं आर्कीटक्चर आदि।

वहां हम सारी कक्षाओं में घूमें। हम सारे स्टूडेंट्स से मिले जो वहां कोर्स करते थे। उनसे हमने बात भी की कि हमें अच्छा लगा। वहां हमें सबसे सुंदर पेंटिग रुम लगा। वह सबसे सुंदर और अच्छा था। वह रूम बहुत सजा हुआ था। वहां तरह-तरह की पेंटिंग्स लगी हुईं थीं। वो पेंटिंग्स वहीं के स्टूडेंट्स ने बनाई थीं। हां, वह इंस्टीट्यूट बहुत पुराना लग रहा था। वहां कमरों में सामान बहुत फैला हुआ था। वहां सारे स्टूडेंट्स क्लास रूम में थे। कोई भी इधर-उधर घूम नहीं रहा था। हर कोई कुछ-न-कुछ कर रहा था। वहां हमें बहुत से ऐसे कोर्स पता चले जो कि बच्चों के भविष्य के लिए बहुत जरूरी हैं।

हम इससे पहले कभी आईटीआई नहीं गए थे। पहली बार हम वहां गए। हमें अच्छा लगा। वहां हम आईटीआई के सारे टीचर्स से भी मिले। उनसे हम बहुत जानना चाहते थे। कुछ बच्चों ने उनसे एडमीशन के बारे में विस्तार में जानकारी ली। आईटीआई के सारे छात्र बहुत होनहार थे। वे खुद से ही मशीन के पार्ट्स बना रहे थे और जोड़ रहे थे। हमें बहुत आनंद आया। शुरू में हमें लग रहा था कि हम वहां बोर हो जाएंगे। पर हमें वहां बहुत मजा आया।

Excitement For School

I miss school
Please send me to school
I will grow up learning the school
I miss school
I miss school, Oh Mother
Please send me to school

Will stand on my feet
Fulfill your dream I will
grew up learning
Will fulfill my dream
Doctor I will be
My mother I miss school

This is when I learned
One but daughter will not stay home
I miss school ,
Oh Mother Please send me school
Let me learn
Give me a clever
When I learned
Growing up name your mother
I miss school, Oh Mother
Please send me to school.

Priyanka Pappu Gavde
8th Std., Prerana
Rainbow Home, Pune

शाळेची तळमळ

मला शाळेला धाड ग आई
शाळेत जाउनयिा
शाळा शिकेन मोठी मी होईन
मला शाळेला धाड आई ,
माझ्या पायावर उभी राहीन
स्वप्न पूरण कारेन मी तुझे ग आई
मला शाळेला धाड ग आई
शिकून मोठी होईन ग आई
माझे स्वप्न पूरण करेन
डॉक्टर मी होईन ग आई
मला शाळेला धाड ग आई
मी शिकल्यावर अशी
एक पण मुलगी नाही राहणार घरी
मला शाळेला धाड ग आई
मला शिकू दे ग आई,
मला हुशार बानू दे ग आई
मी शिकल्यावर
मोठी होऊनिनाव तुझे मोठे करनि ग आई
मला शाळेला धाड ग आई.

The four musketeers

Madhumita Paul, 11th std,
Victoria institute school Kolkata

My name is Madhumita Paul. I think everybody has a friend or two in its life. Those who deny having friends, I think they don't know the meaning of friend. Friends are those people whom one can share everything. I have three friends Shireen, Sumati and Prachi. Four of us always do things together. There are differences among us. I am little older than three of them. I and Shireen like to listen to music in the leisure, but Prachi and Sumati like to play. Sumati's hobby is to draw and play, Prachi's hobby is dancing, Shireen's hobby is to read story books.

If any misunderstanding happens among us, we resolve it by sitting together and discussing within ourselves. We do mischiefs together as well and we know that if we stay together, we will be scolded less. But we never get scolding for our studies. We all study together as well. Other girls have named us as "four musketeers".

I am very lucky to get so nice friends. My friends always stay beside me and help me. Prachi and Sumati are very good dancers as well as sports person. Sumati loves small children and she can easily mix with them. Shireen is a very good painter and singer. I can make people laugh by cracking jokes. During vacations, I miss my friends a lot. I always wish vacations to get over soon. We cherish our friendship and staying at Rainbow Home a lot.

चतुर चौकड़ी

मेरा नाम मधुमिता है। मुझे लगता है कि हरेक इंसान के एकाध दोस्त तो जरूर ही होते हैं। जो यह कहते हैं कि उनका कोई दोस्त नहीं, वे दोस्ती के मायने नहीं जानते। दोस्त वे होते हैं जिनसे हम अपनी सारी बातें साझा कर सकते हैं। मेरी तीन दोस्त हैं- शीरीन, सुमति व प्राची। हम चारों सारे काम एक साथ करती हैं। हममें थोड़े अंतर भी हैं। मैं तीनों से थोड़ी बड़ी हूं। मुझे व शीरीन को तसल्ली से संगीत सुनना पसंद है लेकिन प्राची व सुमति को खेलना पसंद है। सुमति को ड्राइंग का शौक है, प्राची को डांस का और शीरीन को किताबें पढ़ने का।

अगर हमारे बीच कोई गलतफहमी हो जाती है जो हम साथ बैठकर आपस में बात करके उसे सुलझा लेते हैं। हम साथ ही शरारतें भी करते हैं और हमें पता है कि अगर हम साथ रहेंगे तो डांट भी कम पड़ेगी। लेकिन हमें पढ़ाई के लिए कभी डांट नहीं पड़ती। हम साथ ही मिलकर पढ़ाई भी करती हैं। बाकी लड़कियों हमें चौकड़ी कहकर पुकारती हैं। मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे ऐसे अच्छे दोस्त मिले। मेरे दोस्त हमेशा मेरे साथ रहते हैं और मेरी मदद करते हैं। प्राची व सुमति अच्छी डांसर भी और खिलाड़ी भी। सुमति को छोटे बच्चे बहुत पसंद हैं और वह बहुत जल्दी उनमें घुलमिल जाती है। शीरीन पेंटिंग के साथ-साथ अच्छा गाना भी गाती है। मैं चुटकुले सुनाकर लोगों को हंसा सकती हूं। छुट्टियों में मैं दोस्तों की कमी महसूस करती हूं। मेरा मन करता है कि छुट्टियां जल्द खत्म हो जाएं और मैं दोस्तों से जाकर मिलूं। हमें अपनी दोस्ती व रेनबो होम में रहना बहुत अच्छा लगता है।

मधुमिता पॉल, *11वीं, कोलकाता*

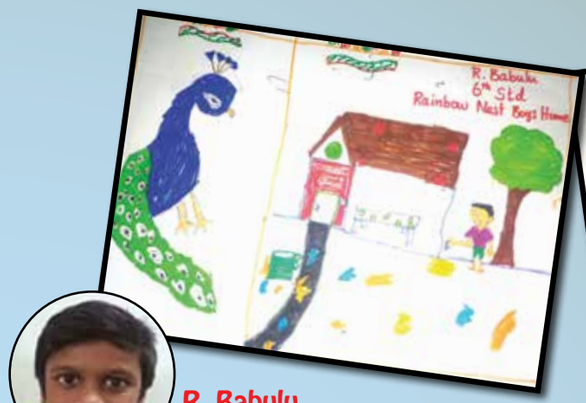

R. Babulu,
6th Std, ASP Home, Chennai

K. Raja,
7th Std, ASP Home, Chennai

From road to Home

Sanju Tiwari, 12th Std, 16 years, Bamkim Ghosh Memorial girl's school, Kolkata

My name is Sanju Tiwari and I am studying in 12th class. We are three sisters. Earlier we used to stay at Belgachia with our parents. My mother had stones in her stomach which took her life. Shortly after her, my father also died in an accident. Two-three months after he passed away, an aunty living close by took us to Sealdah home and got us admitted over there. After few days we were sent to Loreto Rainbow Home. Now I am here for last 12 years.

We couldn't have been able to do anything without Rainbow home. We would have been still living on roads, we wouldn't have got chance to study and go to school, or have been able to have proper food or good clothes. I love being here. I am fond of listening to songs and watch television. Some of the teachers here are very good. I don't like quarrelling with anyone, but I like to play a lot. I want to become a nurse when I am grown up.

सड़क से होम तक

मेरा नाम संजू तिवारी है और मैं 12वीं कक्षा में पढ़ती हूं। हम तीन बहने हैं। पहले हम लोग बेलगछिया में रहते थे। मेरी मां के पेट में पथरी हो गई और उसकी वजह से उसकी मौत हो गई। उसके बाद पापा की भी एक एक्सीडेंट में मौत हो गई। उनके गुजर जाने के दो-तीन महीने बाद, हमारे घर के पास रहने वाली एक ऑटी ने हम तीनों बहनों को सियालदह होम में भर्ती करा दिया। वहां से कुछ दिन बाद हमें लॉरेटो रेनबो होम में भेज दिया गया। मैं अब यहां 12 साल से हूं।

रेनबो होम न होता तो हम कुछ भी नहीं कर पाते। कहीं रास्ते में ही पड़े होते, न पढ़ाई-लिखाई कर पाते और न ठीक से खाना-पीना मिलता। पहनने के लिए अच्छे कपड़े नहीं मिलते और न ही स्कूल जा पाते। मुझे यहां बड़ा अच्छा लगता है। मैं बड़ी होकर नर्स बनना चाहती हूं। मुझे गाना सुनने और टेलीविजन देखने का बहुत शौक है। यहां की कई टीचर्स बहुत अच्छी हैं। मुझे किसी से झगड़ने में मजा नहीं आता लेकिन खेलना बहुत अच्छा लगता है।

संजू तिवारी,
12वीं, उम्र 16 साल, लॉरेटो रेनबो होम, कोलकाता

Somnath Chavan, 9th Std.
15 yrs, Snehghar Rainbow Home, Shivajinagar, Pune

Dream to study got realised

My name is Somnath. When I was eight years old, I lived with my parents on the road in the VT station area of Mumbai. My siblings and I would beg all day and would go to the nearest door for dinner and ask for food. Someone then told my dad about a hostel. That hostel was in Mahalaxmi area that time. Seeing my passion for learning, my father put me in the hostel. But I was often getting sick there. So, I couldn't stay in that hostel for long. I came again on road. I started begging again. A few days later, I came to Pune with my family. While I was living on the footpath in the market yard area of Pune, I started working with my parents selling flowers. Whenever there wasn't the flowering season, I used to beg and bring money. Around that time a social mobilizer came to our area and gave us information about Rainbow Home. My parents decided to put me at Home. I was happy to see other kids like me coming there. After attending the bridge course for about six months, I started attending school. Now I go to school every day to study and learn dance as well as karate. I am studying in 9th standard and doing well in my studies so far.

पढ़ने का सपना हुआ साकार

मेरा नाम सोमनाथ है। मुझे तब की याद है जब मैं आठ साल का था और मुंबई के वीटी स्टेशन इलाके में अपने माता-पिता के साथ फुटपाथ पर रहता था। मैं और मेरे भाई-बहन दिनभर भीख मांगते थे या किसी भी निकट के दरवाजे पर जाकर खाने के लिए कुछ देने की गुहार लगाते थे। उस समय किसी ने मेरे पिता को एक हॉस्टल के बारे में बताया। वह हॉस्टल महालक्ष्मी इलाके में था। मेरे पढ़ने की इच्छा को देखकर मेरे पिता ने मुझे हॉस्टल में डाल दिया। लेकिन मैं वहां अक्सर बीमार रहता था। इसलिए मैं ज्यादा दिनों तक वहां नहीं रह सका। मैं फिर से सड़क पर गया और भीख मांगने लगा। कुछ दिन बाद मैं परिवार के साथ पुणे आ गया। हम पुणे के मार्केट यार्ड इलाके में फुटपाथ पर रहते थे। मैंने अपने माता-पिता के साथ फूल बेचना शुरू कर दिया। जब फूलों का मौसम न होता तो फिर भीख मांगनी पड़ती थी। उन दिनों कोई सामाजिक कार्यकर्ता हमारे इलाके में आए और हमें रेनबो होम के बारे में बताया। मेरे माता-पिता ने मुझे वहां डालने का फैसला किया। मुझे वहां अपने जैसे और बच्चे देखकर खुशी हुई। थह महीने तक ब्रिज कोर्स करने के बाद मुझे स्कूल में दाखिला मिल गया। अब मैं रोज स्कूल जाता हूं और साथ-साथ डांस व कराटे भी सीखता हूं। मैं नौवीं क्लास में पहुंच गया हूं और अच्छे से पढ़ाई कर रहा हूं।

सोमनाथ चव्हाण, *9वीं,*
15 साल, स्नेहघर रेनबो होम,
शिवाजीनगर, पुणे

Prayer प्रार्थना ప్రార్థన

God!
Thank you for this beautiful life as part of creation!

WE believe, we wish, to live in friendship and mutual respect with head held high, in courage and self confidence.

We believe, we wish that all human beings, whether men or women, live in equality, and in happiness, whatever their colour, caste, class, religion, region, language or abilities.

We believe that, we wish to strongly oppose divisive forces and ideologies that spread hatred and divide us and support democratic and non-violent actions for justice, humanity, truth and peace, taking injustice done to others as inflicted on us.

WE believe in, we wish to contribute our mite towards, the building of more humane and free world, in good health and joyful learning and spreading knowledge.

God!

We believe in, and wish to join our tiny hands with the multitude of the people in this ages-old divine journey of love.

ईश्वर अल्लाह
हमारी ये दुआ है कि इस दुनिया में कोई भी बच्चा ना हो जिसे भोजन प्यार सुरक्षा और शिक्षा न मिले और यह भी प्रार्थना हैं कि हम अपने आस पास सबकी जिंदगी में खुशी की रोशनी भर दे।

ಈಶ್ವರ ಅಲ್ಲಾ ಜೀಸಸ್
ನಿಮ್ಮಲ್ಲಿ ನಮ್ಮೆಲ್ಲರ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ
ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಮಗು
ಆಹಾರ ಪ್ರೀತಿ, ಸುರಕ್ಷತೆ ಮತ್ತು
ಶಿಕ್ಷಣದಿಂದ ವಂಚಿತರಾಗದಿರಲಿ
ಇದು ನಮ್ಮ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ
ನಮ್ಮ ಹಾಗೂ ನಮ್ಮ ಸುತ್ತಮುತ್ತಲಿನ
ಎಲ್ಲರ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಸಂತೋಷ
ಹಾಗೂ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ಕರುಣಿಸಿ.

NEWSLETTER OF RAINBOW HOMES

(for private circulation only)

Rainbow Homes Program

Rainbow Homes

EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Anuradha Konkepudi, Executive Director Email: reach@rainbowhome.in
Rainbow Homes Programe ARUN, 1-1-711/c/1, 1st floor,
Opp. vishnu Residency, Gandhinagar, Hyderabad - 80 Office No: 040-65144656